ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN No.: 2347-2944, RNI:UPBIL04292, REG. No.: 561/2013-2014 Vol.-2, No.-2, PP-350-352,YEAR-2015

निर्धनता: समस्या एवं समाधान

❑ डॉ0 आशा साहू

सार – *नियोजित आर्थिक विकास में देश में निर्धनता को कम करने, बेरोजगारी दूर करने, आर्थिक विषमताओं में कमी करने तथा जनसंख्या वृद्धि को रोकने का उद्देश्य रखा गया। लेकिन स्वतंत्रता प्राप्ति के वर्षों से अधिक आर्थिक नियोजन के समय भारत में वर्तमान समय में बेरोजगारी, निर्धनता, आर्थिक विषमता तथा जनसंख्या विस्फोट की समस्या का समाधान नहीं किया जा सका है। इस दृष्टि से हमारे देश में 11 पंचवर्षीय योजनाएं पूरी हो गई है तथा वर्तमान में 12वी पंचवर्षीय योजना जारी है। इन सब प्रयासों के बाबजूद भारतीय आर्थिक समस्याएं– बेरोजगारी, निर्धनता, आर्थिक विषमता तथा जनसंख्या विस्फोट ज्यों की त्यों है।*

प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य निर्धनता की समस्या के कारण तथा इसके समाधान के लिए उपायों का विष्लेशणात्मक विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

निर्धनता की अवधारणा– वर्तमान समय में गरीबी का आंकलन करना एक नई चुनौती है, ऐसा नहीं है कि गरीबी को मिटाना संभव नहीं है। वास्तविकता तो यह है गरीबी को मिटाने की इच्छा कहीं नहीं है। गरीबी का बने रहना समाज की जरुरत है, यह उसी सीमा तक चिन्तनीय है जहां तक उसके कारण जो गरीबी नहीं है, उन्हें भी समस्याएं भुगतनी पड़ती है। योजना आयोग के अनुसार किसी भी व्यक्ति को अपने जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए न्यूनतम निम्न वस्तुएं उपलब्ध होनी चाहिए–

संतोशजनक पौष्टिक आहार, कपड़ा, मकान और अन्य कुछ सामग्रियां जो किसी परिवार के लिए जरुरी है।

न्यूनतम शिक्षा, स्वच्छ पानी और साफ पर्यावरण।

कैलोरी उपभोग मापदण्ड के अनुसार किसी भी व्यक्ति को औसत रुप से स्वस्थ रहने के लिए ग्रामीण क्षेत्र में 2410 कैलारी एवं शहरी क्षेत्रों में 2070 कैलोरी की न्यूनतम आवष्यकता होती है। इसकी पूर्ति के लिए गांव में एक व्यक्ति पर 324.90 रुपये और शहर में 380.70 रुपये का न्यूनतम व्यय होगा। सैद्धान्तिक रुप से निर्धनता को सापेक्ष एवं निरपेक्ष निर्धनता के रुप में परिभाशित किया गया है।

सापेक्ष निर्धनता–सापेक्ष निर्धनता से आशय आय की असमानताओं से है। निर्धनता का सापेक्षिक दृष्टिकोण आय, संपत्ति तथा उपभोग के वितरण में व्याप्त विषमता को दर्शाता है। प्रायः सापेक्ष निर्धनता को मापने के लिए लारेंज वक्र एवं गिनी गुणांक का प्रयोग किया जाता है।

निरपेक्ष निर्धनता– निरपेक्ष निर्धनता से तात्पर्य मानव द्वारा आधारभूत आवश्यकताओं जैसे भोजन, कपड़ा, आवास, स्वास्थ्य, शिक्षा आदि की पूर्ति हेतु पर्याप्त वस्तुओं एवं सेवाओं को जुटा पाने की असमर्थता से है।

तालिका क्र.–1

भारत में निर्धनता अनुपात एवं निर्धनों की निरपेक्ष संख्या

वर्ष	निर्धनता अनुपात (प्रतिशत में)			निरपेक्ष संख्या (करोड़ में)		
	ग्रामीण	नगरीय	अखिलभारत	ग्रामीण	नगरीय	अखिलभारत
1993-94	50.1	31.8	45.3	328.6	74.5	403.7
2004-05	42.0	25.7	37.2	326.3	80.8	407.2
2009-10	33.8	20.9	29.8	278.2	76.4	354.7
2011-12	25.7	13.7	21.9	216.5	52.8	269.3

एसोसिएट प्रोफेसर– अर्थशास्त्र विभाग, नेहरू पी. जी. कॉलेज, ललितपुर (उ0प्र0) भारत

स्रोत- Economic Survey, 2013-14.

निर्धनता की समस्या के कारण–

धन और निर्धनता– सबसे महत्वपूर्ण अध्ययन निर्धनता का है। निर्धनता बेरोजगारी और आर्थिक विषमता का मूल कारण है। विकासशील देशों में निरपेक्ष निर्धनता के भी देखने को मिलती है। दो समय का भोजन इनके लिए विलासिता है, अपने स्वामियों के उतरे हुए कपड़े और बचा हुआ भोजन इनकी खुशकिश्मती है, आवास के अभाव में ये प्रकृति की गोद में जन्म लेते है। अतः भारत में निर्धनता के निम्नलिखित कारण है –

कृषि का आधुनिकीकरण– पारम्परिक रुप से देश में कृषि जीवन का आधार रही है। लेकिन उद्योगों के विकास नकदी तथा व्यवसायिक फसलों के उत्पादन, रासायनिक खाद का अधिक प्रयोग से कृषकों की भूमि अनुत्पादक होती गई, साथ ही कृषि के आधुनिकीकरण से कृषि मजदूरी के अवसरों में कमी आई है ऐसी स्थिति में जीवन निर्वाह करने एवं रोजगार के अभाव में लोग कम मजदूरी पर भी कार्य करने को तैयार हो जाते है।

रोजगार की धीमी गति– भारत देश में श्रमिकों की संख्या में वृद्धि के अनुपात में रोजगार के अवसरों में वृद्धि नहीं हुई है अर्थात् रोजगार का अभाव पाया जाता है। जिसका कारण है विकास की धीमी गति, अपर्याप्त पूंजी निर्माण, पूंजी उत्पादन अनुपात ऊँचा होने से उत्पादन में कमी आदि। ऐसी स्थिति में गरीबी की समस्या उत्पन्न होना सामान्य बात है।

स्थानान्तरण– विकास के नाम पर औद्योगिक इकाइयों की स्थापना एवं बड़ी परियोजनाओं को (बांध, ताप विद्युत परियोजनाएं, वन्य जीव अभ्यारण आदि) को शासकीय स्तर पर बड़ी तत्परता से लागू किया जा रहा है, जिसके परिणामस्वरुप हजारों गांवो को विस्थापित किया गया वहां के निवासियों को अपनी जमीन के साथ साथ परम्परागत व्यवसाय छोड़कर नए व्यवसाय की खोज में निकलना पड़ा। रोजगार के अभाव में भी काम की तलाष में व्यक्ति एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर पलायन करता है।

अपर्याप्त जन सुविधाएं– रोजगार का अभाव एवं मजदूरी कम होने के कारण अधिकांशतः क्षेत्रों में आज भी अनिवार्य सुविधाएं जैसे– शिक्षा, चिकित्सा, पेयजल, परिवहन, आवास एवं विद्युत आदि का अभाव पाया जाता है।

जनसंख्या वृद्धि– जनसंख्या वृद्धि गरीबी का सबसे बड़ा कारण रहा है। जनसंख्या वृद्धि से गरीबों के उपभोग स्तर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है, प्रत्यक्ष रुप से ऐसे परिवारों की आर्थिक स्थिति को क्षति पहुँचती है। साथ ही परोक्ष रुप से बचत एवं निवेश में भी बाधा उत्पन्न होती है।

"एक स्थान की दरिद्रता दूसरे स्थान की सम्पन्नता के लिए एक खतरा है।" आर्थशास्त्रियों का मानना है कि "राष्ट्रों की निर्धनता का अध्ययन राष्ट्रों के धन से भी अधिक महत्वपूर्ण है।" सच यह भी है, क्योंकि सम्पन्नता का अस्तित्व निर्धनता पर ही निर्भर करता है। अन्यथा निर्धनता सम्पन्नता को जीने नहीं देती।

तालिका क्र.–2

मानव विकास सूचकांक

क्र.	देश	मूल्य	रैंक
1	नार्वे	0.955	1
2	आस्ट्रेलिया	0.938	2
3	चीन	0.699	101
4	भारत	0.554	136
5	पाकिस्तान	0.515	146
6	बंग्लादेश	0.515	146

स्रोत– यूएनडीपी मानव विकास रिपोर्ट–2013

आर्थिक विषमता के उत्तरदायी कारक

प्रदर्शन प्रभाव– अल्पविकसित देशों के लोगों में उन्नत देशों का अनुकरण करने की लालसा उत्पन्न करके, उनकी उपभोग प्रवृत्ति को बढ़ाकर पूंजी निर्माण की दर को कम करता है।

सम्पर्क प्रभाव– जब अल्पविकसित देशों के लोग विकसित देशों के उन्नत उपभोग तरीकों व उच्च उपभोग स्तर को जान लेते है तो उनमें उनका अनुकरण करने की लालसा बहुत तीव्र हो जाती है। जैसे– चलचित्र, पत्र पत्रिकाएं आदि से कारों, रेफ्रिजरेटरों, वातानुकूलित साधन आदि।

लैंगिक असमानता इण्डेक्स– लैंगिक असमानता इण्डेक्स प्रजनन स्वास्थ्य, अधिकारिता और श्रम शक्ति भागीदारी के क्षेत्रों में लैंगिक भेद के कारण उपलब्धि में क्षति को दर्षाता है। जिसका मान 0 (पूर्ण समानता) से 1 (पूर्ण असमानता) तक होता है। मानव विकास रिपोर्ट–2013 के अनुसार।

संगठित क्षेत्र में रोजगार– संगठित क्षेत्र में सरकारी और निजी क्षेत्र सम्मिलित होते है। 2011 में संगठित क्षेत्र में वृद्धि 10प्रतिषत बढ़ी है, जो 2010 में 1.9 प्रतिशत रही। 2011 में निजी क्षेत्र के लिए रोजगार की वार्षिक वृद्धि दर 5.6 प्रतिषत रही, जबकि सार्वजनिक क्षेत्र में नकारात्मक बनी रही।

तालिका क्र.–3

सरकारी और निजी क्षेत्रों में समग्र रोजगार 31मार्च की स्थिति के अनुसार(लाख में)

क्षेत्र	2009	2010	2011
सरकारी	177.95	178.62	175.48
निजी	103.77	108.46	114.52
कुल	281.72	287.08	289.99

स्रोत– वार्षिक रोजगार समीक्षा 2011(रोजगार प्रशिक्षण महानिदेशालय, श्रम और रोजगार मंत्रालय)

सामाजिक न्याय सहित विकास प्राप्ति के उपाय– स्पष्ट है कि आर्थिक विकास तभी सार्थक है जब वह सामाजिक न्याय को उपलब्ध करा सके। आर्थिक विकास के इंजन को, गरीबों की अवहेलना और आय की विषमता द्वारा ईंधन देना कदापि न्यायोचित्त नहीं है।

विकास का स्वरुप ऐसा हो, जो गरीबी उन्मूलन पर प्रत्यक्ष प्रहार कर सके।

एक उचित कीमत आय नीति को लागू करना।

विकास में पिछड़े क्षेत्रों को प्राथमिकता देना।

रोजगार सृजन के कार्यक्रम को प्रभावी रुप से लागू करना।

भूमि सुधार एवं उसका समान वितरण करना।

सार्वजनिक वितरण प्रणाली को अधिक व्यापक तथा प्रभावी ढंग से लागू करना।

निष्कर्ष– स्वतंत्रता के बाद से सरकारी नीतियों का उद्देश्य समता और सामाजिक न्याय सहित तीव्र विकास और संतुलित आर्थिक विकास रहा है। यद्यपि इस कार्य के लिए विशाल धनराशियाँ आवंटित और खर्च की जा चुकी है, किन्तु फिर भी हम लक्ष्य से बहुत दूर है। यही नहीं, विकास के लाभ जनता के सभी वर्गों तक नहीं पहुँच पाए है। दूसरी ओर सामाजिक और आर्थिक विकास की कसौटियों पर देश के कुछ क्षेत्रक अर्थव्यवस्था के कुछ वर्ग और समाज के कुछ अंष तो अनेक विकसित देशों से भी प्रतियोगिता कर सकते है, फिर भी समाज का बहुत बड़ा समुदाय जो अभी भी निर्धनता के कुचक्र से मुक्ति नहीं पा सका है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्रवाल ए. एन., भारतीय अर्थव्यवस्था (विकास एवं आयोजन), न्यू एज इन्टरनेशनल एण्ड लिमि. पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2010।
2. पाण्डेय जितेन्द्र कुमार, स्व सहायता समूह आर्थिक स्वावलम्बन के सशक्त माध्यम, 2010।
3. पद्मावती, ग्रमीण निर्धनता : निर्धनता निवारण कार्यक्रमों का मूल्यांकन, तिवारी पब्लिकेशन, 1991।
4. रुद्रदत्त, सुन्दरम के. पी . एम., भारतीय अर्थव्यवस्था, एसचंद्र एण्ड कंपनी लिमि., नई दिल्ली, 2005।
5. सिंह आनन्द प्रकाश, सुनिश्चित रोजगार एवं ग्रामीण विकास, अमन प्रकाशन, सागर, 2000।
6. समयान्तर मासिक पत्रिका।
7. योजना मासिक पत्रिका।
8. परीक्षा वाणी, भारतीय अर्थव्यवस्था, इलाहाबाद।
9. भारतीय अर्थव्यवस्था, धनकर प्रकाशन, कानपुर।

*****